तत्त्वार्थसूत्र

परिचय - पुनरावर्तन

मूलसूत्र

हितोपदेशी — वीतरागी

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये॥

सर्वज्ञ — प्रयोजन - भावना

आगे की विषय-वस्तु....

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
अवधिज्ञान का वर्णन	२१	१
क्षयोपशम निमित्तक अवधिज्ञान के भेद तथा उनके स्वामी	२२	१
मन:पर्ययज्ञान के भेद	२३	१
ऋजुमति और विपुलमति में अंतर	२४	१
अवधिज्ञान और मन:पर्ययज्ञान में विशेषता	२५	१
मति , श्रुत , अवधि , मन:पर्यय , केवलज्ञान का विषय	२६-२९	४
एक जीव के एक साथ कितने ज्ञान हो सकते हैं ?	३०	१

मन:पर्ययज्ञान के भेद

ऋजुविपुलमती मन:पर्यय: ॥ २३ ॥

अर्थ – [मन:पर्ययः] मनःपर्ययज्ञान [ऋजुमतिविपुलमतिः] ऋजुमति और विपुलमति दो प्रकार का है।

ऋजुमति और विपुलमती में अन्तर

विशुद्ध्यप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः ॥ २४ ॥

अर्थ - [विशुद्ध्यप्रतिपाता यां] परिणामों की विशुद्धि और अप्रतिपात अर्थात् केवलज्ञान होने से पूर्व न छूटना [तद्विशेषः] इन दो बातों से ऋजुमति और विपुलमति ज्ञान में विशेषता (अन्तर) है।

ऋजुमति और विपुलमती में अन्तर

विषय	ऋजुमति	विपुलमति
धारक	अचरमशरीरी मुनिराज	चरमशरीरी मुनिराज
विशुद्धता	विपुलमति से कम	ऋजुमति से ज्यादा
प्रकार	छूट सकता है	कभी नहीं छूटता
पदार्थ का ज्ञान	सरल और चिन्तित	चिन्तित और अचिन्तित; वक्रचिन्तित और अवक्रचिन्तित

ऋजुमति और विपुलमती में अन्तर

विषय का ज्ञान	ऋजुमति	विपुलमति
काल अपेक्षा जघन्य	भूत-भविष्यत के अपने और दूसरे के २-३ भव जानता है	भूत-भविष्यत के अपने और दूसरे के ७-८ भव जानता है
काल अपेक्षा उत्कृष्ट	भूत-भविष्यत के अपने और दूसरे के ७-८ भव जानता है	भूत-भविष्यत के अपने और दूसरे के असंख्यात भव जानता है
क्षेत्र अपेक्षा जघन्य	३ कोस से ऊपर और ९ से नीचे	३ योजन से ऊपर और ९ से नीचे
क्षेत्र अपेक्षा उत्कृष्ट	३ योजन से ऊपर और ९ से नीचे	मानुषोत्तरपर्वत के भीतर तक

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र २३ , २४

आगे की विषय-वस्तु....

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
अवधिज्ञान का वर्णन	२१	१
क्षयोपशम निमित्तक अवधिज्ञान के भेद तथा उनके स्वामी	२२	१
मन:पर्ययज्ञान के भेद	२३	१
ऋजुमति और विपुलमति में अंतर	२४	१
अवधिज्ञान और मन:पर्ययज्ञान में विशेषता	२५	१
मति , श्रुत , अवधि , मन:पर्यय , केवलज्ञान का विषय	२६-२९	४
एक जीव के एक साथ कितने ज्ञान हो सकते हैं ?	३०	१

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र २५

अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञान में विशेषता

विशुद्धक्षेत्रस्वामिविषयेभ्योऽवधिमनःपर्यययोः ॥ २५ ॥

अर्थ – [अवधिमनःपर्यययोः] अवधि और मनःपर्ययज्ञान में [विशुद्धिक्षेत्र–स्वामिविषये यः] विशुद्धता, क्षेत्र, स्वामी और विषय की अपेक्षा विशेषता होती है।

अध्याय १: सूत्र २५ - अवधिज्ञान और मन:पर्ययज्ञान में विशेषता

विशुद्धक्षेत्रस्वामिविषयेभ्योऽवधिमन:पर्यययो: ॥ २५ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

- मनः पर्ययज्ञान उत्तम ऋद्धिधारी भाव-मुनियों के ही होता है और अवधिज्ञान चारों गतियों के सैनी जीवों के होता है, यह स्वामी की अपेक्षा से भेद है।
- उत्कृष्ट अवधिज्ञान का क्षेत्र असंख्यात लोक-प्रमाण तक है और मन:पर्ययज्ञान का ढाई द्वीप मनुष्यक्षेत्र है। यह क्षेत्रापेक्षा से भेद है।

अध्याय १: सूत्र २५ - अवधिज्ञान और मन:पर्ययज्ञान में विशेषता

विशुद्धक्षेत्रस्वामिविषयेभ्योऽवधिमन:पर्यययो: ॥ २५ ॥ - सूत्र की विषयवस्तु

- स्वामी तथा विषय के भेद से विशुद्धि में अन्तर जाना जा सकता है, अवधिज्ञान का विषय परमाणुपर्यन्त रूपी पदार्थ है और मन:पर्ययज्ञान का विषय मनोगत विकल्प है।
- विषय का भेद सूत्र २७-२८ की टीका में दिया गया है तथा सूत्र २२ की टीका में अवधिज्ञान का और २३ की टीका में मन:पर्ययज्ञान का विषय दिया गया है, उस पर से यह भेद समझ लेना चाहिए ॥२५ ॥

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र २५

आगे की विषय-वस्तु....

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
अवधिज्ञान का वर्णन	२१	१
क्षयोपशम निमित्तक अवधिज्ञान के भेद तथा उनके स्वामी	२२	१
मन:पर्ययज्ञान के भेद	२३	१
ऋजुमति और विपुलमति में अंतर	२४	१
अवधिज्ञान और मन:पर्ययज्ञान में विशेषता	२५	१
मति , श्रुत , अवधि , मन:पर्यय , केवलज्ञान का विषय	२६-२९	४
एक जीव के एक साथ कितने ज्ञान हो सकते हैं ?	३०	१

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र २६-२९

मति-श्रुतज्ञान का विषय

मतिश्रुतयोर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु ॥ २६ ॥

अर्थ - [मतिश्रुतयोः] मतिज्ञान और श्रुतज्ञान का [निबन्धः] विषय-सम्बन्ध [असर्वपार्ययेषु] कुछ (न कि सर्व) पर्यायों से युक्त [द्रव्येषु] जीव-पुद्गलादि सर्व द्रव्यों में है।

मतिश्रुतयोर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु ॥ २६ ॥ - मति-श्रुतज्ञान का विषय

- मतिज्ञान और श्रुतज्ञान सभी रूपी-अरूपी द्रव्यों (जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल) को जानते हैं,
- किन्तु उनकी सभी पर्यायों को नहीं जानते,
- उनका विषय-सम्बन्ध सभी द्रव्य और उनकी कुछ पर्यायों के साथ होता है।

मतिश्रुतयोर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु ॥ २६ ॥ - मति-श्रुतज्ञान का विषय

प्रश्न – जीव, धर्मास्तिकाय इत्यादि अमूर्तद्रव्य हैं, उन्हें मतिज्ञान कैसे जानता है, जिससे यह कहा जा सके कि मतिज्ञान सब द्रव्यों को जानता है ?

मतिश्रुतयोर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु ॥ २६ ॥ - मति-श्रुतज्ञान का विषय

उत्तर – अनिन्द्रिय (मन) के निमित्त से अरूपी द्रव्यों को अवग्रह, ईहा, अवाय और धारणारूप मतिज्ञान पहिले उत्पन्न होता है और फिर उस मतिज्ञानपूर्वक श्रुतज्ञान सर्व द्रव्यों को जानता है और अपनी योग्य पर्यायों को जानता है।

मतिश्रुतयोर्निबन्धो द्रव्येष्वसर्वपर्यायेषु ॥ २६ ॥ - मति-श्रुतज्ञान का विषय

- आत्मा का निर्विकार स्वसंवेदन ज्ञान जो सम्यक्मतिपूर्वक भावश्रुतरूप है, उसका विषय त्रिकाली शुद्ध आत्मा होता है।
- इन दोनों ज्ञानों के द्वारा जीव को भी यथार्थतया जाना जा सकता है ॥२६ ॥

अवधिज्ञान का विषय

रूपिष्ववधे: ॥ २७ ॥

अर्थ - [अवधेः] अवधिज्ञान का विषय-सम्बन्ध [रूपिषु] रूपी द्रव्यों में है अर्थात् अवधिज्ञानरूपी पदार्थों को जानता है।

रूपिष्ववधेः ॥ २७ ॥ - अवधिज्ञान का विषय

- जिसके रूप, रस, गन्ध, स्पर्श होता है, वह पुद्गलद्रव्य है; पुद्गलद्रव्य से सम्बन्ध रखनेवाले संसारी जीव को भी इस ज्ञान के हेतु के लिए रूपी कहा जाता है। [सूत्र २८ की टीका]

रूपिष्ववधेः ॥ २७ ॥ - अवधिज्ञान का विषय

- जीव के पाँच भावों में से औदयिक, औपशमिक और क्षायोपशमिक - यह तीन भाव (परिणाम) ही अवधिज्ञान के विषय हैं और
- जीव के शेष-क्षायिक तथा पारिणामिकभाव और धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य, आकाशद्रव्य और कालद्रव्य अरूपी पदार्थ हैं, वे अवधिज्ञान के विषयभूत नहीं होते।

रूपिष्ववधे: ॥ २७ ॥ - अवधिज्ञान का विषय

- यह ज्ञान सब रूपी पदार्थों और उनकी कुछ पर्यायों को जानता है ॥२७ ॥

मनःपर्ययज्ञान का विषय

तदनन्तभागे मनःपर्ययस्य ॥ २८ ॥

अर्थ –[तत् अनन्तभागे] सर्वावधिज्ञान के विषयभूत रूपी द्रव्य के अनन्तवें भाग में [मनःपर्ययस्य] मनःपर्ययज्ञान का विषय सम्बन्ध है।

तदनन्तभागे मन:पर्ययस्य ॥ २८ ॥ - मन:पर्ययज्ञान का विषय

- परमावधिज्ञान के विषयभूत जो पुद्गलस्कन्ध हैं,
- उनका अनन्तवां भाग करने पर जो एक परमाणुमात्र होता है, सो सर्वावधि का विषय है,
- उसका अनन्तवाँ भाग ऋजुमति-मन:पर्ययज्ञान का विषय है और
- उसका अनन्तवां भाग विपुलमति-मन:पर्ययज्ञान का विषय है।

(सर्वार्थसिद्धि, पृष्ठ ४७३)

अध्याय १: सूत्र २८ - मन:पर्ययज्ञान का विषय

सूत्र २७-२८ का सिद्धान्त-औदयिक , औपशमिक तथा क्षायोपशमिक भाव रूपी कैसे ?

- अवधिज्ञान और मन:पर्ययज्ञान का विषय रूपी है, ऐसा यहाँ कहा गया है।
- अध्याय दो सूत्र एक में आत्मा के पाँच भाव कहे हैं, उनमें से औदयिक, औपशमिक तथा क्षायोपशमिक ये तीन भाव, इस ज्ञान के विषय हैं, ऐसा २७वें सूत्र में कहा है। इससे निश्चय होता है कि परमार्थत: यह तीन भाव रूपी हैं अर्थात् वे अरूपी आत्मा का स्वरूप नहीं है।

सूत्र २७-२८ का सिद्धान्त-औदयिक , औपशमिक तथा क्षायोपशमिक भाव रूपी कैसे ?

- क्योंकि आत्मा में से वे भाव दूर हो सकते हैं और जो दूर हो सकते हैं, वे परमार्थतः आत्मा के नहीं हो सकते।
- 'रूपी' की व्याख्या अध्याय पाँच के सूत्र पाँचवें में दी है। वहाँ पुद्गल 'रूपी' है - ऐसा कहा है और पुद्गल स्पर्श, रस, गन्ध, वर्णवाले हैं, यह अध्याय पाँच के २३ सूत्र में कहा है।

सूत्र २७-२८ का सिद्धान्त-औदयिक , औपशमिक तथा क्षायोपशमिक भाव रूपी कैसे ?

- **श्रीसमयसार की गाथा ५० से ६८ तथा २०३** में यही कहा है कि वर्णादि से गुणस्थान तक के भाव पुद्गलद्रव्य के परिणाम होने से जीव की अनुभूति से भिन्न हैं, इसलिए वे जीव नहीं हैं।
- वही सिद्धान्त इस शास्त्र में उपरोक्त संक्षिप्त सूत्रों के द्वारा प्रतिपादन किया गया है।

सूत्र २७-२८ का सिद्धान्त-औदयिक , औपशमिक तथा क्षायोपशमिक भाव रूपी कैसे ?

- **अध्याय २ सूत्र १** में उन भावों को व्यवहार से जीव का कहा है। यदि वे वास्तव में जीव के होते तो कभी जीव से अलग न होते, किन्तु वे अलग किए जा सकते हैं, इसलिए वे जीवस्वरूप या जीव के निजभाव नहीं हैं ॥२७–२८ ॥

केवलज्ञान का विषय

सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ॥ २९ ॥

अर्थ - [केवलस्य] केवलज्ञान का विषय-सम्बन्ध [सर्वद्रव्य-पर्यायेषु] सर्वद्रव्य और उनकी सर्व पर्याय हैं अर्थात् केवलज्ञान एक ही साथ सभी पदार्थों को और उनकी सभी पर्यायों को जानता है।

सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ॥ २९ ॥ - केवलज्ञान का विषय

केवलज्ञान — असहाय ज्ञान अर्थात् यह ज्ञान इन्द्रिय, मन या आलोक की अपेक्षा से रहित है। वह त्रिकालगोचर अनन्त पर्यायों को प्राप्त अनन्त वस्तुओं को जानता है। वह असङ्कुचित, प्रतिपक्षी रहित और अमर्यादित है।

सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ॥ २९ ॥ - केवलज्ञान का विषय

शङ्का – जिस पदार्थ का नाश हो चुका है और जो पदार्थ अभी उत्पन्न नहीं हुआ, उसे केवलज्ञान कैसे जान सकता है?

सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ॥ २९ ॥ - केवलज्ञान का विषय

- **समाधान** – केवलज्ञान निरपेक्ष होने से बाह्य पदार्थों की अपेक्षा के बिना ही नष्ट और अनुत्पन्न पदार्थों को जाने तो इसमें कोई विरोध नहीं आता।
- केवलज्ञान को विपर्ययज्ञानत्व का भी प्रसङ्ग नहीं आता, क्योंकि वह यथार्थ स्वरूप से पदार्थों को जानता है। यद्यपि नष्ट और अनुत्पन्न वस्तुओं का वर्तमान में सद्भाव नहीं है, तथापि उनका अत्यन्ताभाव भी नहीं है।

सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ॥ २९ ॥ - केवलज्ञान का विषय

- केवलज्ञान सर्व द्रव्य और उनकी त्रिकालवर्ती अनन्तानन्त पर्यायों को अक्रम से एक ही काल में जानता है; वह ज्ञान सहज (बिना इच्छा के) जानता है। केवलज्ञान में ऐसी शक्ति है कि अनन्तानन्त लोक-अलोक हों तो भी उन्हें जानने में केवलज्ञान समर्थ है।

(विशेष स्पष्टता के लिये देखो अध्याय १ परिशिष्ट ५ जो बड़े महत्वपूर्ण हैं।)

सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ॥ २९ ॥ - केवलज्ञान का विषय

शङ्का – केवली भगवान के एक ही ज्ञान होता है या पाँचों ?

समाधान –

- पाँचों ज्ञानों का एक ही साथ रहना नहीं माना जा सकता, क्योंकि मतिज्ञानादि आवरणीय ज्ञान हैं; केवलज्ञानी भगवान क्षीण आवरणीय हैं,

सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ॥ २९ ॥ - केवलज्ञान का विषय

- इसलिए भगवान के आवरणीय ज्ञान का होना सम्भव नहीं है, क्योंकि आवरण के निमित्त से होनेवाले ज्ञानों का (आवरणों का अभाव होने के बाद) रहना हो सकता है—ऐसा मानना न्याय-विरुद्ध है।

(श्री धवला पुस्तक ६, पृष्ठ २९-३०)

सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ॥ २९ ॥ - केवलज्ञान का विषय

- मति आदि ज्ञानों का आवरण केवलज्ञानावरण के नाश होने के साथ ही सम्पूर्ण नष्ट हो जाता है। [देखो, सूत्र ३० की टीका] एक ही साथ सर्वथा जानने की एक-एक जीव में सामर्थ्य है।

सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ॥ २९ ॥ - सूत्र का सिद्धान्त

- 'मैं पर को जानूँ तो बड़ा कहलाऊँ' ऐसा नहीं, किन्तु मेरी अपार सामर्थ्य अनन्त ज्ञान-ऐश्वर्यरूप है, इसलिए मैं पूर्णज्ञानघन स्वाधीन आत्मा हूँ - इस प्रकार पूर्ण साध्य को प्रत्येक जीव को निश्चित करना चाहिए;

सर्वद्रव्यपर्यायेषु केवलस्य ॥ २९ ॥ - सूत्र का सिद्धान्त

- इस प्रकार निश्चित करके स्व से एकत्व और पर से विभक्त (भिन्न) अपने एकाकार स्वरूप की ओर उन्मुख होना चाहिए। अपने एकाकार स्वरूप की और उन्मुख होने पर सम्यग्दर्शन प्रगट होता है और जीव क्रमशः आगे बढ़ता है और थोड़े समय में उसकी पूर्ण ज्ञान-दशा प्रगट हो जाती है ॥२९ ॥

अध्याय १: सूत्र २६-२९ - सार

ज्ञान के प्रकार	द्रव्य	पर्याय
मति-श्रुतज्ञान	रूपी-अरूपी	कुछ
अवधिज्ञान	रूपी	कुछ
मन:पर्ययज्ञान	रूपी	कुछ
केवलज्ञान	रूपी-अरूपी	सभी

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र २६-२९

आगे की विषय-वस्तु....

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
अवधिज्ञान का वर्णन	२१	१
क्षयोपशम निमित्तक अवधिज्ञान के भेद तथा उनके स्वामी	२२	१
मन:पर्ययज्ञान के भेद	२३	१
ऋजुमति और विपुलमति में अंतर	२४	१
अवधिज्ञान और मन:पर्ययज्ञान में विशेषता	२५	१
मति , श्रुत , अवधि , मन:पर्यय , केवलज्ञान का विषय	२६-२९	४
एक जीव के एक साथ कितने ज्ञान हो सकते हैं ?	३०	१

जिनवाणी स्तुति